* विद्यार्थियों में निर्देशन के मुद्दे एवं समस्यायें :- (Issues and problems ~~and need~~ of Guidance in Students)

निर्देशन का मूल कार्य उन व्यक्तियों की सहायता करना है जिन्हें अपनी समस्या के समाधान के लिए सहायता की आवश्यकता है और जो सहायता चाहते हैं।
मानव स्वभाव की जटिलता, एक ही माता-पिता के बच्चों में भी होने वाला विकास संबंधी अंतर परिवर्तनशील परिस्थितियाँ तथा सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक दशाओं में निरंतर होने वाली न्यूनता इत्यादि निर्देशन के मुद्दे हैं।
NCERT (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद), राष्ट्रीय स्तर पर राज्यों में निर्देशन शाला, राज्य शैक्षिक अनुसंधान ~~प्रशिक्षण~~ एवं प्रशिक्षण परिषद तथा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भी इस कार्य को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।
चूँकि देश की जनसंख्या बढ़ने से शिक्षित बेरोजगारी में वृद्धि हुई है परिणामस्वरूप निर्देशन की समस्या अत्यंत जटिल एवं चुनौतिपूर्ण बन गई है। अतः शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिक निर्देशन के सभी क्षेत्रों में निर्देशन के भिन्न-भिन्न मुद्दे विद्यमान हैं।

निर्देशन के मुद्दे एवं समस्यायें :-

→ प्रशिक्षण का अभाव
→ व्यवस्था की कमी
→ अभिभावकों की उदासीनता

→ मानकीकृत उपकरणों की कमी

→ निर्देशन सेवाओं में विविधता (ग्रामीण, शहरी, पिछड़े, कमजोर इत्यादि)

→ प्रशिक्षित विद्यालयों के संख्या की आवश्यकता

→ शैक्षिक प्रणाली में अपेक्षित अभिरुचि की कमी

→ व्यवसायों एवं उद्यमों के अवसरों का अभाव

→ निर्देशन के क्षेत्र में विशेषज्ञों का अभाव

→ ~~विशिष्ट निर्देशन~~ आवश्यकता वाले बच्चों की समस्यायें

(1) <u>प्रशिक्षण का अभाव</u> :- निर्देशन कार्यक्रमों को व्यवस्थित रूप देने हेतु उनके प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए जिसका वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी अभाव है

(2) <u>व्यवस्था की समस्या</u> :- शैक्षिक, व्यावसायिक एवं वैयक्तिक क्षेत्रों में उपलब्ध निर्देशन सेवाओं का प्रबंध एवं उनकी व्यवस्था अपने पारस्परिक तालमेल एवं संगठन एवं सहयोग की दृष्टि से कई तरह की समस्याओं से ग्रस्त है। अर्थात निर्देशन संस्थाओं में प्रबंधन की उचित व्यवस्था नहीं है।

(3) <u>अभिभावकों की उदासीनता</u> :- अभिभावकों की निर्देशन सेवाओं में महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए निर्देशन सेवाओं के प्रभावी संचालन हेतु आवश्यक है कि अभिभावकों को निर्देशन के ढाँचे में ढाला जाये।

(4) मानकीकृत उपकरणों की कमी :- निर्देशन कार्यों में अपेक्षित संसाधनों का अभाव एवं मानकीकृत परीक्षणों की कमी एक आम समस्या है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, मनोवैज्ञानिक केंद्रों, कैरियर केंद्रों पर व्यावसायिक सूचना का अभाव है, निर्देशन की दृष्टि से उपयोगी पाये जाने वाले वस्तुनिष्ठ उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है अतः हेतु उपकरणों की रचना एवं उनके मानकीकरण (परीक्षण किया हुआ) पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

(5) निर्देशन सेवाओं में विविधता एवं समस्या :- भिन्न-भिन्न पृष्ठभूमि वाले बच्चों जैसे ग्रामीण एवं शहरी, अनुसूचित जाति एवं जनजाति, सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से पिछड़े, हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम आदि के लिए एक ही प्रकार की सूचनाओं, संप्रेषण विधि आदि के कारण भी कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

(6) विद्यार्थियों की संख्या में अधिकता :- निर्देशन किशोरों को सम्यक रूप देने से विभिन्न आयु वर्ग विशेषकर युवा वर्ग को महत्वपूर्ण माना जाता है। वर्तमान परिवेश में विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या काफी अधिक है तथा उनके सूचना (संप्रेषण) आदि ढंग से नहीं पहुँच पाता है अतः सूचना एवं प्रौद्योगिकी संसाधनों का प्रयोग कर निर्देशन कार्यक्रमों को बढ़ावा दे सकते हैं।

(7) शैक्षिक प्रशासकों में अपेक्षित अभिप्रेरणा की कमी :- निर्देशन कार्यक्रमों को सुचारु रूप से संचालन हेतु प्रशिक्षित निर्देशनकर्ताओं के अतिरिक्त शिक्षकों

प्रधानाचार्यों, प्रबंधकों में प्रायः अपेक्षित समय एवं धैर्य की कमी देखी जाती है। अर्थात वे उदासीन बने रहते हैं। संस्थाओं में निर्देशन कि प्रक्रिया उनकी आवश्यकता एवं महत्व का ज्ञान कराने हेतु विशेष गोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन कम ही किया जाता है, जिस कारण इनमें रोजगार निर्बाधि या अन्य बातों के लिए मार्गदर्शन का अभाव पाया जाता है।

(8) व्यवसायों एवं उद्यमों के अवसर का अभाव :-

विद्यालय में प्रबंधकों, प्रधानाध्यापक और शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के रुचि के अनुसार पाठ्यक्रमों का चयन करने में सहायता करनी चाहिए परन्तु इनमें ~~उचित प्रकार से~~ विविधता ~~के~~ होने के कारण तथा विभिन्न शिक्षा जैसे कृषि विज्ञान, गृह विज्ञान हस्तशिल्प तथा तकनीकि एवं व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए मार्गदर्शन प्रदान किया जा सकता है।

(9) निर्देशन के क्षेत्र में शोधकार्य का अभाव :-

निर्देशन प्रदान करने वाले व्यक्ति को पूर्ण रूप से विषय विशेषज्ञ तथा सभी प्रकार से परिपूर्ण होना चाहिए। निर्देशन के क्षेत्र में ~~नये~~ नवीन शोधों तथा पाठ्यक्रम में नवीन विषयवस्तुओं का समावेश का शोधकर्ता छात्रों को उचित

10) विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की समस्यायें :-

जो बच्चे सामान्य और औसत बच्चों की तुलना में अत्यंत भिन्न होते हैं उन्हें विशिष्ट बच्चे की संज्ञा दी जाती है। अतः ऐसे बच्चों की पहचान कर उन्हें उचित मार्गदर्शन के द्वारा उनकी समस्याओं को दूर किया जा सकता है।